
आलस्य और अलबेलापन - 14

अव्यक्त बापदादा :- (08.05.1973)

» _ » स्वयं के त्याग से औरों का भाग्य बनता है। जहाँ स्वयं का त्याग नहीं वहाँ औरों का भाग्य नहीं बनता। बाप ने स्वयं का त्याग किया, तभी तो आप अनेक आत्माओं का भाग्य बना। तो शुरु की स्थिति में स्वयं के सभी सुखों का त्याग था इससे यह भाग्य बने। अब जितना त्याग, उतना भाग्य बना रहे हो औरों का। इसलिए वारिस छिप गये हैं। **तो अब फिर से वही महादानी बनने का संस्कार व सदा सर्व प्राप्ति होते हुए भी और सर्व साधन होते हुए भी साधन में न आओ, साधना में रहो।**

» _ » **अभी साधना कम है, साधन ज्यादा हैं। पहले साधन कम थे, साधना ज्यादा थी। इसलिए अभी निरन्तर उस साधना में रहो अर्थात् साधन होते हुए भी त्याग वृत्ति में रहो।** जिससे थोड़े समय में ऊंची आत्माओं का भाग्य बना सको। बापदादा ने सभी के हाथ में अब आत्माओं के भाग्य की रेखा लगाने की अथॉरिटी दी है। तो ऐसा न हो कि अपने त्याग की कमी के कारण अनेक आत्माओं के भाग्य की रेखा सम्पन्न न कर सको।

» _ » बहुत जिम्मेवारी है। जैसे-जैसे समय समीप आता जा रहा है, वैसे-वैसे संकल्प में भी व्यर्थ न गंवाने की जिम्मेवारी भी हरेक आत्मा के ऊपर बढ़ती जा रही है। अभी अपना बचपन नहीं समझना। बचपन में जो किया वह अच्छा लगता था। बच्चे का अलबेलापन अच्छा लगता है, बड़पन नहीं और बड़ों का फिर अलबेलेपन अच्छा नहीं लगता है इसलिये समय के प्रमाण अपने स्वमान को कायम रखते हुए जिम्मेवारी को सम्भालते जाओ। समझा?

➤➤ स्वयं के त्याग से औरों का भाग्य बनता है

» _ » **ब्राह्मण आत्माओं को किन चीजों का त्याग करना है**

- व्यर्थ संकल्पों का
- अलबेलापन
- परचिन्तन, परदर्शन
- खान-पान की आसक्ति
- किसी की कमी-कमजोरी देखने का
- एक्स्ट्रा साधन सुविधाओं का
- **नींद और भोजन को संयमित करना है**
- नाम-मान-शान का त्याग
 - ये सूक्ष्म त्याग है
 - कोई अच्छा कार्य किया तो appreciation की इच्छा
- **त्याग का भी त्याग**
 - त्याग किया उसका भी अभिमान
 - सर्वश त्याग करना है
- एक्स्ट्रा रेस्ट

→ विकारों का त्याग

- अवचेतन में विकारों की जड़ें हैं
- हमारे संकल्प चेतन में चल रहे हैं
- जड़ें जन्म-जन्म की हैं, गहराई में हैं
- अचानक ये विकार जागृत हो जाते हैं
- इसके लिए कठोर गहरी साधना चाहिए
- Conscious और Sub-conscious के बीच का बैरियर Pre-conscious खुलता है सुबह और रात को सोते समय
- श्रेष्ठ संकल्प करने का बेस्ट टाइम है-
 - ▶ सुबह उठते ही 5, 10, 15 मिनट श्रेष्ठ संकल्प करने से सीधा sub-conscious में जाता है
 - ▶ रात को सोते समय बिस्तर पर- योग करने का उपयुक्त समय है

→ विलासिता, भोग, सुख-सुविधाओं का त्याग

- भोगी और योगी का जीवन एक समान नहीं हो सकता
- दोनों विपरीत मार्ग हैं
- दोनों में कठिनाईयां हैं, दोनों में जलना है,
 - ▶ मनन-चिन्तन, तपस्या, अशरीरीपन का अभ्यास
 - ▶ भोग के लिए भी संसार में भागदौड़ है
 - ▶ जलते-जलते भोगी राख हो जाता है
 - ▶ जलते-जलते योगी हीरा बन जाता है
 - ▶ और वो हीरा संसार को प्रकाशित करता है

→ व्यर्थ बोल का

→ अनावश्यक इच्छाओं का

→ ऐसी हर बात का जो बाबा और हमारे बीच में है

➤➤ साधन और साधना

- » _ » शुरुआत में साधन कम थे, साधना ज्यादा थी
- » _ » साधन कम होने से स्वतः ही साधना बढ़ जाती है
- » _ » आज विज्ञान के दिए हुए स्थूल साधनों में फंस रहे हैं
- » _ » ये सब बंधन हैं, जंजीरें हैं जिनको हम अपना श्रृंगार समझते हैं

→ हर आत्मा अपने ही संस्कारों के बंधन के कारागृह में फंसी है

- उसके मन की ग्रंथियों से, काम्प्लेक्स से वो जटिल हो गया है
- अन्दर का वायुमंडल क्या है, हमारा अंतरजगत बहुत विशाल है, बाह्यजगत से

» _ » तपस्या ना करके साधनों में फंस रहे हैं

»→ _ »→ क्या कितना जरूरी है ये जानना ही अध्यात्म है

→ नहीं तो छोटे से छोटी चीज भी बंधन बन सकती है

■ स्वतंत्र, निर्बन्धन बनना है, किसी पर निर्भर नहीं रहना

► श्रेष्ठ साधना तब होती है जब साधनों से हम

ऊपर होते हैं

»→ _ »→ साधन होते हुए भी त्याग वृत्ति में रहना है, उपराम रहना है

➤➤ बहुत जिम्मेवारी है

»→ _ »→ Great Power Comes With Great Responsibility

»→ _ »→ समय की समीपता प्रमाण हमारी सूक्ष्म जिम्मेवारी है

»→ _ »→ संकल्प में भी व्यर्थ ना हो

→ ये सोचना की हम अमृतवेला कर रहे, मुरली पढ़ रहे, चिन्तन भी करते, शाम को योग भी करते पर अभी भी व्यर्थ संकल्प चल रहे

■ हमें सबको साक्षी होकर देखना है चाहे कोई कुछ भी बोले

»→ _ »→ सदा श्रेष्ठ संकल्प ही करना है

»→ _ »→ संकल्प ही बीज हैं, इसलिए महान संकल्पों की रचना करनी है

»→ _ »→ जो पढ़ा केवल सुनना नहीं है, अनुभव करना है, चिन्तन करना है

→ ज्ञान की गहराई में जाना है

■ ज्ञान के प्रति हमारी एक स्टूडेंट के समान लगन हो

► हर दिन एक अव्यक्त वाणी रोज पढ़नी है

► ज्ञानी, योगी बनने के लिए टाइम की आवश्यकता नहीं है

► समय को चुराना होता है
